#४. विकसित चेतना की आवश्यकता -३

दिनांक २३/०९/२०११

सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति के रूप में सम्पूर्ण सहअस्तित्व स्थिति के रूप में प्रस्तुत है | यह हर मानव को समझ में आता है- होने के रूप में; रहने के रूप में समझना शेष रहता है | परस्पर रहने का ही पहचान हो पाता है | रहने के आधार पर होने की स्वीकृति होती है | सर्वमानव में इस बात को परीक्षण,सर्वेक्षण रूप में देखा जा सकता है | देखने का आधार सर्वमानव में समान रूप में विद्यमान है | देखने का स्वरुप दृष्टिगोचर, ज्ञानगोचर विधि से देखा जाता है | ज्ञानगोचर विधि से ज्ञानार्जन, दृष्टिगोचर विधि से स्थिति, गति का निर्धारण हो पाता है | यह हर मानव में पाये जाने वाले विशेष गुण हैं | ये देखने का गुण अथवा ऐसा देखने का गुण अथवा प्रक्रिया,मानव में ही विद्यमान है न कि अन्य प्रकृति में | जीवों में कुछ संवेदनाएं व्यक्त होते हैं | शब्द संवेदना, रूचि संवेदना सहज प्रवृतियों में स्पष्ट होता है |

यही मानव में शब्द, स्पर्श,रूप, रस,गंध इन्द्रियों के रूप में पांच संवेदनाओं के साथ स्पष्ट होता है | जीवों में सुविधा संग्रह का कार्यक्रम नहीं होता | वंशानुषंगी विधि से जीने का विधि रहता है | मानव चार विषय, पांच संवेदनाओं के साथ सुविधा संग्रह लक्ष्य के लिये जीता हुआ देखने को मिलता है | आज की स्थिति में सर्वाधिक लोग सुविधा संग्रह के पक्षधर हैं जिसको पाने के लिए सम्पूर्ण अवैधता को वैध माना गया | यही अपराध प्रवृति हुआ |

यद्यपि आदिकाल से ही मानव भय, प्रलोभन से पीड़ित है अथवा वशीभूत है | जंगल युग से ही जीव जानवर, रंग एवं नस्ल के साथ भयभीत होते रहे | सुखपूर्वक जीने की इच्छा से अनेक प्रयोग करना,इतिहास-इन सभी चीजों के अवलोकन से पता चलता है कि मानव आदिकाल से ही भय और प्रलोभन से व्यंजित रहा है | इसी को आंशिक रूप में जीवों में भी प्रकट होना पाया जाता है | जीवों का प्रलोभन आहार आदि चार विषयों के रूप में ही रहता है | भय, जीव भय से ही प्रधान प्रकाशन रहता है | इन सभी को भली प्रकार से देखने पर जीवों से भिन्न तरीके से मानव का जीने का शुरुआत हुआ है | ऐसा भिन्न तरीके का स्वरुप जीवों से अच्छा जीने के अर्थ में ही है | आज की स्थिति में यह स्वरुप मानव परम्परा में स्पष्ट हो चुकाहै |

जीवों से अच्छा जीने के क्रम में ही कपड़ा से शुरुआत करते हुए सुविधा संग्रह की मानसिकता में मानव तुल चुका है | यह प्रकृति सहज रहा है | मानव प्रकृति और नियति सहज प्रक्रिया के संयोग के अनुसार सुविधा संग्रह में व्यस्त हो गया है | सुविधा संग्रह विधि से मानव सर्व अपराधों को वैध मान लिया है यह सीमा सुरक्षा में प्रकट है | सुविधा संग्रह के साथ प्रलोभन प्रवृत्तियों से प्रच्छन्न है | प्रच्छन्नता का आशय छुपे रहने से है अथवा सर्वविदित न होने से है | इन सभी तथ्यों का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि इन्हीं सब घटनाओं से अथवा घटना क्रम से न्यायापेक्षी रहने वाला मानव,न्याय पाया नहीं अथवा न्याय का ज्ञान ही नहीं हुआ |

न्याय अपेक्षा व्यक्त होता रहा, यह सुदूर विगत से स्पष्ट हुआ है | नियति विधि से मानव में न्यायापेक्षा,सुखी होने की अपेक्षा,सम्पूर्ण ज्ञानापेक्षा बना ही है | यह अपेक्षाएं सुदूर विगत से ही बनी हैं | यह घटना क्रम से पुष्ट होता गया | अभी इसकी आवश्यकता अनिवार्य रूप में प्रकट हो गयी है | यह केवल मानवकृत कृत्यों से बनी है | यही है सभी अपराधों को वैध समझना

| इससे क्या परेशानी हुईयह स्पष्ट हो गया है | धरती बीमार हो गयी, यह पहला आधार है | दूसरा आधार प्रदूषण छा गया है | प्रदूषण में जिया कैसे जाए यह परेशानी सर्वाधिक लोग मानते ही हैं | इन परेशानियों से छूटना आवश्यक हो गया है | सर्वमानव शुभ के अर्थ में ही इससे छूटना होता है | सर्वमानव में उपयोगिता,पूरकता प्रमाणित होना ही सर्वशुभ सिद्ध होना है |

इसी कामनावश चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधा को अध्ययन विधि से मानव सम्मुख प्रस्तुत किया है | इसमें पारंगत,प्रमाण,वर्तमान होने से अपराधमुक्त आदमी का, भयमुक्त आदमी का, प्रलोभनमुक्त आदमी का पहचान हो पाता है |

सर्शुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत